जानकी जयति

मैथिली गीत चन्द्रिका

व्यावहारिक भाग

श्रोत्रियवंशावतंस लब्धप्रतिष्ठ श्रीयुत हेमपति (विकल) शर्म्मात्मज

श्री श्यामानन्द शर्म्म निर्म्मित

संशोधक

प० श्री मुकुन्द झा 'चनौर'

सन् १९३२ साल

मूल्य =)॥

प्रथम बार १०००

स्नेहार्पण

माननीय

युगल भागिनेय

बाबू चि० श्रीयुत उग्रधारी सिंह

तथा

चि० श्रीयुत कृष्णानन्दन सिंह साहब

क

शैशवोज्ज्वल कमल कोमल कर में

प्रथम तथा बालकालिक रचना क संग्रह

चन्द्रिका

सादर सानुनय सस्नेह

समर्पित

इति

स्नेहस्निग्ध

श्री श्यामानन्द झा

प्राक्कथन

भारतीय-भाषा मात्र में गीत-साहित्य क सौभाग्य मैथिली-भाषा क सर्व्वश्रेष्ठ छैक ई आब कोनों विज्ञव्यक्ति सँ अविदित नहि अछि। ओ दूएकटा प्राचीन मैथिलीगीतसंग्रह प्रकाशित भय दृष्टि-गोचरो भेल अछि से सभ रहलौ पर एहि संग्रह कें प्रकाशित करवा क किछु अन्य प्रयोजन अछि।

प्रथमतः साहित्यभाण्डार क अभिवृद्धि करव (अणुरपि विशेषोऽध्यवसायकरः) प्रस्तुत संग्रह क साहित्यिक महत्व सँ अतिरिक्त एक महत्व अछि—व्यावहारिक, ओ साम्प्रतिक मैथिली भाषा क निकटवर्त्तिता पूर्वक संग्रह सभक साहित्यिकमहत्व रहलौ पर व्यावहारिक ई क्रमवद्ध महत्ता नहि तदतिरिक्त ओकर भाषा किछु प्राचीन रहलासं आधुनिक मैथिली सँ किछु दूर भय गेल छैक अतए व साधरणावोधगम्यो नहि ई सभ अनेक कारणेँ एहि संग्रह क उपादेयता सिद्ध होइछ। तखन गुणदोष क विषय में—से एक तँ गुण-दोष-विवेचन में जाहि वहुमुखी विज्ञता ओ रचना क प्रति तटस्थता अपेक्षित छैक से सभ हमरा में एको नहि तखन ओहि हेतु चेष्टा क अनधिकार चेष्टा मात्र होएत तेँ ओकर भार विज्ञ-वाचक लोकनिपर छोड़ि ओहि सँ बिरत होमय पड़ल। अन्त में मैथिली साहित्यमहारथी लोकनि सं निवेदन जे उदीयमान कवि कें-उत्साहित करवा क दृष्टियेँ-सहानुभूतिपूर्वक त्रुटि प्रदर्शन ओ गुणकथन करथि, मक्षिकादृष्टियेँ साहित्यपरिशोधन करवा क हेतु पर्य्याप्त सम्पत्ति एखन मैथिली कें नहि छैक।

आशा अछि मैथिली भाषा भाषी एहि संग्रह क समुचित आदर करत।

श्री दुर्गाधर झा

शारदा शरणम्

मैथिली गीत चान्द्रिका

गोसाउनि

(१)

जय कमलासिनि ! करुणागारे !
जननि ! महेश्वरि ! त्रिभुवनसारे !
रचित-चतुर्भुज- रुचिर—बिहारे !
कुशलं वितरतु भगवति ! तारे !
अभिनव-भूषण-चय—विन्यस्ते !
मञ्जु-विपञ्ची—पुस्तक—हस्ते !
श्यामानन्दविनोदिनि ! शस्ते !
शुभ्रतमे ! मम देवि ! नमस्ते !

दक्षिणकालिका

(२)

जय करुणाकरि दक्षिण देवी। शारद–शिशु–शशि–शेखर–सेवी
रिपुशिरहार भयानकभेसा। घोरवदन पुनि फूजल केशा
चारिभुजाअतिपीनउरोजे । सृकथल बहय असृकअतिओंजे
नीरदनीलवरन तनुभासे । दन्तुरदन्त मधुरमुखहासे
दिशावसन लस शिवशववासे। चहुदिश फेरव-रव-परकासे
तीनि नयन शवडुंड़ लस काने। अरिकरनिकर ललित परिधाने
अभयवरद दक्षिणकर शोभी। लहलह जीह मधुरमधु लोभी
मञ्जुल खड्ग मुण्ड कर वामे। सदावास समशान ललामे
विषमचरित अतिविकटनिनादे। सुखअभिमुखमुख परमप्रसादे
फुरितवदन वह शोनितधारा। करिय कृपादृग त्रिभुवनतारा
श्यामानन्द 'बालकवि' भाने। तात हेमपति सेवि सुजाने

तारा

(३)

जय भगवति ! तारे ! भगवति ! तारे !
चारिभुजा तिनिनयन ललामे । तरुनविरोचनमण्डलधामे
पदऊपर लस पद अभिरामे। रिपुशिर सरसीरुह कर वामे

जगव्यापक जल माँझ सरोजे। तसु लस लम्बउदर अति ओ
नवयौवनदुति हसित मनोजे। वामनतनु पुनि पीन उरो
बाघचरम कटिथल परिधाने । दक्षिनकर करपाल कृप
अगम अगोचर के कर भाने। घोरवदन करुना परध
पिङ्गल एक जटा शुचिभासे। चहुदिश ज्वलित चिता तत व
भीषन दन्तुरदन्त विकासे। लहलह रसना मञ्जुल हा
मुद्रा पाँच रचल तनुशोभे। कुल—भूषन नाशित–जन–क्षो
तारिनि ! तुअ तनु दुरगम ध्याने। करिय न शरनागत अपम
श्यामानन्द 'बालकवि' भाने। तात हेमपति सेवि सुज

त्रिपुरसुन्दरी

(४)

जय जय त्रिपुरसुन्दरी देवी
अयुततरुनरवितेज भालतल शिशुशशिशोभी
अरुन वसनपरिधान हृदयजन सद्गतिलोभी
धनुष पाश। सृणि
~~कुसुमचाप शब~~ इक्षु चारि कर परमललामे
श्रीयुतचक्र निवास निखिल जग में अभिरामे
शक्ति विराजित गात नयन तिनि सृष्टिनिदाने
श्यामानन्द सुजान हेमपति–पद—नतिमाने

भुवनेश्वरी

(५)

जय जय जय भुवनेश्वरि ! देवी !
नीरद वदन चिकुरचयशोभित शुचिकिरीटशशिसेवी
मृदु विकसित आनन उन्नतकुच तीनिनयन अभिरामे
दक्षिणकर दुइ लस अकुंशवर पाशअभय दुइ वामे
उदयसमय सरसिजवल्लभदुति अरुन मनोहरभासे
श्यामानन्द हेमपति-पद-नत देवि ! तोहर एक आशे

भैरवी

(६)

अरुन वसन मृदुहसन तरुन अति रविसहस्रतनुभासे
अनुपम चरित अगम गुनवरनन रिपुशिरहारविलासे
लुधिरलिपितछबि पीनपयोधर शशिमनि मुकुटललाटे
विकसित-सुन्दर-सरसिज-वासिनि ! वसन मनोहर पाटे
तीनिनयन तासँ अतिदुतिमय मुखसरोज अभिरामे
चारि भुजा पुस्तक जपमाला अभय वरद लस जामे
भैरवि ! देवि ! करिय करुनादृग शरनागत निजदासे
श्यामानन्द हेमपतिसेवक पूरिय अभिमत आशे

छिन्नमस्ता

(७)

कमल-कोष-दिनेश-मण्डल लसु प्रशस्ता हे
जयति पुस्तक-युक्त-हस्ता छिन्नमस्ता हे
कुसुम-राशि-विलास रचि नित सुभगबाला हे
दहिनहाथ कृपान आओर कुसुममाला हे
निजकंठसँविगलितलुधिरकेरधारपायिनि हे
मुखप्रसारित रसय रसना मुक्तिदायिनि हे
नागवर उपवीत राजित मुक्तकेशिनि हे
रचि सुरतविपरीत कामिनि मञ्जुवेशिनि हे
पीनउन्नततमपयोधर भीमदेहा हे
कोटिरविदुति योगिनीगन में सनेहा हे
हेमपतिपदकमलरजकन शिरलगाओल हे
सुकवि श्यामानन्द अनुपम सुयश पाओल हे

बगलामुखी

(८)

सुधासिन्धु विच मरकत कत मनि जड़ित रत्न केर वेदी
तसु लस ललितसिंहासन ता विच देवीपद भयभेदी

पीत बसन भूषन ओ माला फूजल चिकुर ललामे
सुवरन पीतवरन के वरनय रिपुरसना कर वामे
भुजा युगल तसु दहिन गदा लय करथि वैरिहिय पीड़ा
मङ्गल करिय सदा बगलामुखि ! अति विचित्र तुअ क्रीड़ा
लोचनयुग भयमोचन शुचिमय जय करुनामयि देवी
श्यामानन्द हेमपति सेवक हेरिय निज पद सेवी

मातंगी

(९)

श्यामलतनुदुतिशेखरचाने । के करि शक तुअगुनलवगाने
तीनिनयन कर लस असिपाशे । अंकुश खेट ललित परकाशे
अष्टसिद्धिसेवित जगमाता । विनतिविनत सुर मुनि धाता
जननी चरन भगतगतिलोभी । मनिमण्डित सिंहासन शोभी
अनुगतजन दय सम्पति नाना । आनन विशद मनोहर बाना
सिद्धिरूप मातङ्गिनि देवी । करिय शुभाशिष निजपदसेवी
श्यामानन्द 'बालकवि' भाने । तात हेमपति सेथि सुजाने

लक्ष्मी

(१०)

माहे भवनिधि तारिनि ! कमले !!
चारिद्विरद घट अमिय पुरल लय सेचन कर शिर सकले
सुवरन वरन वराभय कर दुइ मञ्जुल मूरति विमले

दुइ कर कमल किरीट लसित शिर चारु चरित अतिविमले !
सरसिजग्रथित मृदुहास रुचिर पट भूषित जय हरिमहिले
देहु अभय वरदान महेश्वरि ! निखिल भुवनतलप्रबले !
श्यामानन्द हेमपतिसेवक भान प्रमुख कविपटले

धूमावती

(११)

जय जय जय धूमावति ! माता !!
काक पीठ पर चरन युगल तत अवनत जगनिरमाता
परम मलिन पहिरनपट शोभित लोचन अधिक भयाने
अति विशाल रसनावलि भीषन उदर सूप परमाने
उपचित घाम आङ व्यापन कर भूख वेयाकुल देहा
अधिकसमुन्नत गात विनययुत फूजल चिकुर सनेहा
श्याम वदन अतिरुच्छ विकट छबि अखिलजगत भयहारी
श्यामानन्द हेमपति-पद गहि अरजु पदारथ चारी

दशावतार

(१२)

प्रलय महाजल सँ छल त्रिभुवनखेदे
राखल ततय तरनि भय वेदे
जय जय जय मीनस्वरूप ! जय कमलाधिपते !

बलि कें छल कियए अछल पठाए
इन्द्र कपद कें देल बजाए
जय जय वामन रूप ! जय कमलाधिपते !

भूषित कयलधरनि सँ दाँत क शृङ्गे
कुसुमकली पर जनु थिर भृङ्गे
जय जय जय सूकररूप ! जय कमलाधिपते !
भारमगन धरती लखि करुनादीठे
ताहि उबारल दय निजपीठे
जय जय जय कमठस्वरूप ! जय कमलाधिपते !
खम्भमाँझ सँ लय अनुपमअवतारे
कयल हिरन्यकशिपु-सँहारे
जय जय जय नरहरिरूप ! जय कमलाधिपते !
कयल लुधिरधारा सँ रंजितसंसारे
क्षत्रियवंशक कय संहारे
जय जय जय भृगुपतिरूप ! जय कमलाधिपते !
दशमुख प्रानविमुखकय राज्यमहाने
देल विभीषण कें पुनि दाने
जय जय जय रघुवररूप ! जय कमलाधिपते !
धवलशरीरजलदद्दुति शुचिपरिधाने
हल लय प्रकटित कृपानिधाने
जय जय जय हलधररूप ! जय कमलाधिपते !
क्रतु में घात कहय जे श्रुतिसमुदाये
निन्दा करथि तकर अकुलाये
जय जय जय बुद्धस्वरूप ! जय कमलाधिपते !

पाणिसरोरुह में गहि अदयकृपाने
नाशत सकल-यवन-सन्ताने
जय जय जय कल्किस्वरूप ! जय कमलाधिपते !
श्यामानन्द सुखी कय दशावतारे
करिय हेमपति भवनिधिपारे
जय जय जय दशविधरूप ! जय कमलाधिपते !

बालगोपाल

(१३)

बालगोपालमुरति लखि के जन अधम अघाय
अङ्ग अङ्ग अन्तरछवि निरखय नयन समाय
कुञ्चित केश जलदद्दुति अथक धुरायलदेह
कटिधरिया वंशीधर व्रजयुवती सँ नेह
श्रुति मकराकृतकुण्डल मधुर मधुर तोतराय
रचिरचि चरित नचावथि चकित यशोदा माय
तातहेमपतिपद गहि पाव पदारथ चारि
श्यामानन्द 'बालकवि' मोहन मन अवधारि

दोसर

(१४)

भूषित वनमालं त्रिभुवनपालं वेणुधरं रामानुचरम्
हृतयुवतिविचारं दलितनिकारं मञ्जुतरं मोषणचतुरम्
सपदि सलीलं रचयति शीलं यस्य परं विस्मयनिकरम्
तमहं वालं नौमि गोपालं मोदकरं परितापहरम्
अतिकमनीयं हेमपतीयं शुचिरुचिरं पदकमलवरम्
अयतिमिलिन्दः श्यामानन्दः सुचिरतरं हरिमभयकरम्
यो युवतिनिचोलं कर्षति लोलं स्पृशति परं तासामधरम्
तमहं वालं नौमि गोपालं मोदकरं परितापहरम्

रामचंद्रक चैतावर

(१५)

सहजहिं मनदय रघुबर! अरे मोहि रघुबर ! हे
चरन कमल में राखिय अरे मोहि राखिय हे
वनिय न कथमपि निरदय अरे मोहि निरदय हे
आवय छनछन लखि छबि अरे मोहि लखिछबि हे
भगति करय नहिं जानिय अरे नहि जानिय हे
आश केवल करुना केर अरे करुना केर हे

[illegible] हेमपतिपद गहि अरे हम पदगहि हे
श्यामानन्द सुकविवर अरे भन कविवर हे

श्री कृष्ण

(१६)

हरिहो तोहर मरम नहि जानी
जलथल सगर नगरभरि ताकय हिय न हेरय अगियानी
अधरम धरम नियत नहि कारन अजगुत पग निरवानी
[illegible] मति कय जनम बितावय मरम न पावय प्रानी
श्यामानन्द हेमपतिसेवक बृथा बनय अभिमानी

महादेव

(१७)

दृग सँ बहय नीर मन ने रहय थीर
भोला कखन आव करुना करब हो
सेवा सकल हीन सुख में सदा लीन
यमयातना नाथ ! कोना सहब हो
मन में भरल काम दुख पावि परिनाम
तोरा विना कानि ककरा कहब हो

अढरनढरन नाम भोला दयाधाम
तनिका बिछुड़ि और कनिका गहब हो
यदि ने दयाभाव भोला करी आब
तँ जानि की अन्त की भय रहब हो
आरतविधुरश्याम शिव आब सवयाम
तोरे चरन केर चाकर बनव हो

सोहर

(१८)

अवतरु नन्दकिशोर, विभूषितकुण्डल हे ललना
भेल नगर भरिसोर, मुदितव्रजमंडल हे
सुषमा लखि नरनारि, नयन फल पाओल हे ललना
वहय हरष केर वारि, मधुरपदगाओल हे
परमपुरुष लखि परिजन, सहज कृतारथ हे ललना
श्यामानन्द मुदितमन, भन परमारथ हे

छठिआर

(१९)

छठमादिन छठिआर, नगर हकारल हे ललना
होरिला विविध प्रकार, ननदो ओङारल हे
साठिगोसाउनि आवि, सौरि भय वैसथु हे ललना

लिखथु लगन मनभावि, मनोरथ पूरथु हे
होरिला अरपल तोर, साठिगोसाउनि हे ललना
धनि क पुरह पुनि कोर, ननदो मनाउनि हे
आंतुक सुखअनुमान, मनहु के कय शक हे ललना
श्यामानन्द सुजान, हेमपतिसेवक हे

नन्ना भैया

(२०)

नन्नाभैया नन्नाभैया नन्नाभैया भात। होरिला रहय निरुज सवगात
कोर कय होरिला धनी लजाय। वैसली विचघर हरष मनाय
धनी लय नेना वहराय। ताहिवजवितहिं पुनि घर जाय
कौरी आङन छीटल गेल। हरष क वारि न्यनभरिभेल
श्यामानन्द 'बालकवि' भान। तातहेमपतिसेवि सुजान

नामकरन

(२१)

नाम करन विधि आज। एकादश वासर हे ललना
शुभशुभ करय समाज। हर्षित हिय घरघर हे
विधिवत नत कय माथ। पुजल पुनि ग्रहगन हे ललना
मधुलय दूविक हाथ। कयल शुभ अङ्कन हे
बालक व्यास समान। जिवथु गिरिधररमि हे ललना
श्यामानन्द सुजान। हेमपतिपद नमि हे

कुमारि क गौरीपूजा

(२२)

लय सिन्दुर फल सुकुसुम वारि। मन क मनोरथ मनहिं निश्रारि
सुमुखि अरचु गिरिराजकुमारि। पाश्रोल परम पदारथ चारि
चानन अरपि वारि करपूर। माङ्ल अभय माङ भरिपूर
शैलदुलारि नमाविय शीश। देहु अपन सन वर जगदीश
करिय दयामयि! उचित सोहाग। हरष क दिवस आज बड़ भाग
श्यामानन्द 'बालकवि' भान। तात हेमपति सेवि सुजान

होरिला क चुमाश्रोन

(२३)

होरिला क करथि चुमाश्रोन। जनु उपजल सुरभितसोन
पुरजनि मङ्गल गाश्रोल। हिय अति हरष मनाश्रोल
दूबि अक्षत लय आशिष। होरिला होथु जगत तिष
श्यामानन्द सुकविवर। हेमपतिचरन क अनुचर

कुमारि क महेशबानी

(२४)

मन अनुकूल कथा भेल हरष अधिकाएल
वर बरिश्रात तुलित भय नगर लग आएल

दुलहिनि अधिक सोहाग सुमुखवर लाश्रोल
पुरुब क सुकृत विशेष तकर फल पाश्रोल
श्यामानन्द 'बालकवि' मुदित मन गाश्रोल
हेमपतिभगतिपयोधि हृदय नहवाश्रोल

परिछनि

(२५)

पुरजनि चलली शुभ खन। परिछिय दुलहा बुधजन
धूप दीप कर में धय। डाला चान कलभ लय
मडुआ मृज साजि सब। गायनि गाव सुपद नव
ललित धुनेस कुसुम माल। विधि करि गहल नवल डाल
आगाँ मङ्गल घट भेल। परिछिनि सुमति परिछि लेल
श्यामानन्द सुकवि भन। सेवि हेमपति गुरुजन

कन्या दान

(२६)

सुखद अवसर आज हे

शुभ खन परल हकार नगरभरि हरषित सकल समाज हे
गायनि गावि मनाश्रोल मङ्गल बहुविधि बाजा बाज हे
देल सुमुखि कर सुमुख पानि पर उपजल दुहु मन लाज हे
तापर रतन फूल फल जल दय पूरित शङ्ख विराज हे
शुभ शुभ कय यजमान यथाविधि पूरल मङ्गल काज हे
श्यामानन्द हेमपति पूजल पाश्रोल सब समराज हे

सिन्दूर दान

(२७)

शुभ शुभ उपगत मङ्गल काल। पसरल सरस नेह नव जाल
सुपुरुष ! सिन्दुर करिय प्रदान। बनिय अवोध दुलारि परान
सुख दुख कय जीवन भेल एक। राखव धनि करगह क विवेक
अनल सविध कय अङ्गीकार। पूरन करव शपथ अनुसार
श्यामानन्द 'बालकवि' भान। तात हेमपति सेवि सुजान

उपनयन

(२८)

आज जनौआ शुभ दिन रे हरषित नरनारी
गायत्री-मन्त्रा-भिय रे गुरु देलन्हि ढारी
कुमर कमल दुति पावन रे भेला ब्रह्मचारी
भीख माङि व्रत राखथु रे पावथु फल चारी
श्यामानन्द सुकविवर रे गाओल अवधारी
तात हेमपति-पद-रति रे वितरथु त्रिपुरारी

पसाहिनि

(२९)

करिय पसाहिनि सुमुखि सोहागे। उपगत आज सोहागिनि भागे
पुरुब जनम छल सुकृत विशेषे। पाओल परम मनोहर वेषे

[illegible] मुख-चान अचानक लाजे। हरष-वारि ढर सकल समाजे
श्यामानन्द 'बालकवि' भाने। तात हेमपति सेवि सुजाने

अन्न परासन*

(३०)

आज सुखद शुभ-काल, अन्नपरासन हे ललना
पायस चाखल बाल, वैसि नव आसन हे
पुरजनि आशिष देल, हरष बढ़ाओल हे ललना
संपति रहय अलेल, बिधि सँ मनाओल हे
हेमपति-चरन क वारि, शिर सँ लगाओल हे ललना
श्यामानन्द विचारि, सोहर गाओल हे

देहरि छेकैक

(३१)

छेकल द्वार दुलहिनि केर भाय। सुपुरुष रहथि अधिक अगुताय
देहरि छोरिदिअ देवइनाम। वितयचाह शुभ-छन अभिराम
अभिमत पावि देल पगु छारि। शुभशुभ कयल सकल नरनारि
श्यामानन्द 'बालकवि' भान। तात हेमपति सेवि सुजान

*क्रम सँ ई गीत क्रमबद्ध भय नहि छपिसकल पूर्वहि छपव उचित छल।

दोसर

(३२)

विना इनाम देव नहि जाय । बहिन छेकल देहरि अगुआय
गाओल पुरजनि मङ्गल बाढ़ । सुमुख धनी सङ रहला ठाढ़
उचित लगन नहि वीतयदेल । अभिमत पुरि गृह उपगत भेल
श्यामानन्द 'बालकवि' भान । सेवि हेमपति—चरन महान

गौरीपूजा

(३३)

सुमुखि गिरिजा चललि पूजय, जय मधुर-कल-गान गूजय
कुसुम-माल ललाम लय जल सङ्ग साजल रे
नव-नागरी-गन हरखि गावय, मन क अभिमत सकल पावय
मुरज झंझरि वेणु बहुविध बहुरि बाजल रे
लय फूल कुंकुम अगर केसरि, नील-नव-पट पहिरि वेसरि
पुजल गौरि—गनेश बाला हरष छाजल रे
हेमपति-पद-कमल—रज-कन, लेल श्यामानन्द अनुखन
वरष शत रहु सुमुखि शोभित नयन—काजल रे

झिल्ली सम्हारैक

(३४)

धनी सुमुख सङ वैसल कोवर, झिल्लीलेल सम्हारि
सुमुख धनीपद धनी सुमुख-कर देलैन्हि सकुचि ओङारि

[illegible] हसाओल मण्डल हरषित छलि पुर—नारि
श्यामानन्द हेमपति सेवक अरज पदारथ चारि

मुट्ठी छोरवैक

(३५)

कोवर—घर अति कौतुक, विरचल कामिनि गोरि
सुमुख सोहागिनि कर सँ, करथि जनौआ चोरि
धनि देल हाथ सकत कय, दुलह विफल कयवेरि
हँसय लाग युवतीगन, सुपुरुष—मुख—छवि हेरि
आज जनौआ विनु वरु, भोजन करथु जमाय
देय करताल कहय सब, कोवरा क रीति सुनाय
श्यामानन्द 'बालकवि', गाओल हृदय विचारि
तात—हेमपति—पद गहि, अरज पदारथ चारि

लगहरभरैक

(३६)

लय नव, कलस भरल जल रे, हिय हरखि सयानि
सिन्दुर चानन औंसल रे, कोवरा घर आनि
अरुन वसन सं झाँपल रे, देल पल्लव डारि
कौतुक कय पुनि राखल रे, सिरहर नव-नारि
हेमपति-भगति-सरोवर रे, भय मज्जित वारि
श्यामानन्द कवीश्वर रे, गाओल अवधारि

योग

(३७)

सुपुरुष ! नेह लगाएब, सुख पाएब,
उपगत होयत सोहाग हमर गुन गाएब ।
नेह-लता यदि तोरब, मुख मोरब,
अचरज योगिनिनाम योग-गुन छोरब ।
सतत क्षमा हिय राखब, मृदु भाखब,
फलित-पिरीति-लता क मधुर फल चाखब ।
योगिनि अजगुत जानब डर मानब,
नहिं तँ देब लगाय प्रेम-मद-दानव ।
हेमपति क पद-पल्लव, हम पूजब,
श्यामानन्द सुजान भगति मति याचब ।

दोसर

(३८)

सुनिय सुमुख ! हम योगिनि रे, करि कामरुवास
तिहुँतल छनपँह मोहिनि रे, कय योग-विकास
सुपुरुष वश में आनब रे, दुलहिनि नव-नेह
प्रीति सुदृढ़ गुन बान्हब रे, दामिनि-दुति-देह
हेमपति—भगति—सरोवर रे, पुनिपुनि अवगाह
श्यामानन्द कवीश्वर रे, नहि पाविय थाह

जुआ खेलाइक

(३९)

जुआ खेलाय दुलारि, पहुक सङ बैसल
एक दुइ पासा ढारि, चालि सब सैंतल
मन, शरीर, धन, कांति, हरखि पहु राखल
हम जितलहुँ सब भांति, सुमुखि हंसि भाखल
हेमपति—पद—नतिमान, सकल फल पाओल
श्यामानन्द सुजान, मुदितमन गाओल

महुअक

(४०)

नागरिगन अतिहरषित रे, कर मंगल गाने
दुलहिनि दहिन विराजित रे, रचि विलमि-पयाने
पायस परसु नवल—दल रे, दम्पति कर भोगे
साहस कय कर फेंकल रे, पहिलुक शुभ-योगे
हेमपति—भगति—सरोवर रे, कय सुखद सलाने
श्यामानन्द कवीश्वर रे, आशिष दय भाने

घसकट्टी

(४१)

सुपुरुष ! हांसू कर धय। काटिय घास तुरग लय
यवस कान्ह चढाविय। मन सङ्कोच न लाविय

उचित इनाम सकल लेब। दहिन भेल छथि विधिदेव
प्रनमि हेमपति—गुरुजन। श्यामानन्द सरस भन

चतुर्थी

(४२)

भेल प्रभात ललितगर, मति सागर
आज चतुर्थी शुभ-विधि, करु गुन-निधि
समटि सेज धनि रीतल, घर नीपल
पालो पर पुनि वैसल, लय शुचि-जल
नागरिगन नहवाओल, सुख पाओल
श्यामानन्द सुकविभन, नमि गुरुजन

दसाउति

(४३)

आज दसाउति नवमा दीन। सखिगन सकल हरष में लीन
आनन काजल दीप हरीर। पान बियनि सम्पुट नवनीर
अयना सुरभित फूल क माल। हाथ लेल अइहव शुभ-काल
सात सादि लय वर सुख-भेर। सिन्दुर-दान कयल दशवेर
श्यामानन्द 'बालकवि' भान। तात हेमपति सेवि सुजान

फूलतोरी

(४४)

[illegible] [illegible]-पट-वासे। थिर विजुली घन भासे
[illegible] [illegible] वरनारी। फूल फुलल फुलवारी
[illegible] [illegible] कुसुम-चय। चुनल सुमुखि कौतुक कय
[illegible] हरषित भय। गौरी पूजल मन दय
श्यामानन्द सुजाने। हेमपति क कय ध्याने

अभिसार

(४५)

[illegible] हे कामिनि रूप निधाने
[illegible]-कमल-युग पर शशि-मण्डल हो कदाच उपमाने
चिकुर-निचय जनु राहु पसारल रसना सिन्दुर-रेहे
[illegible] [illegible] मुख-चान अचानक मन उपजय सन्देहे
[illegible] चञ्चु बनाय शुकी जनु दाँतक दाडिम-दाने
[illegible] करय मनोरथ पुनि पुनि होइछ दृढ़ अनुमाने
[illegible] क काँति समटल पुनि देखि कलंक क रेखा
[illegible] मास निधि में मज्जन कर तदपि न चान क लेखा
हेमपति—चरण-भगति-सुरसरिता अनुदिन कय असलाने
श्यामानन्द 'बालकवि' सुन्दरि किछु छवि छाह सुजाने

उचिती

(४६)

सुपुरुष-कुल अवदात रे। हमर आज परभात रे
गहल धनिक कर आव रे। करथि न दोसर भाव रे
अबला कुमति-अगाध रे। होयत कत अपराध रे
तकर करथि नहि रोष रे। प्रभु-वर करुना-कोष रे
पुरव धनिक अनुरोध रे। धनि अतिशय निरबोध रे
श्यामानन्द सुजान रे। हेमपति-पद-नतिमान रे

दोसर

(४७)

अबला सं कत दोष रे। सुबुध तदपि परितोष रे
करव पिरीति-निवाह रे। करगह पूरथि नाह रे
उपचित छल बड़भाग रे। धनि कें सुखद सोहाग रे
श्यामानन्द सुजान रे। हेमपति-पद-नतिमान रे

तेसर

(४८)

सुपुरुष ! क्षमा करव सनमानि। हमर धिया सहजहिं अगियानि
बुध-हिय गुन-गाहन-परिपाक। मधुकर कुसुम-कांट नहि ताक

[illegible] हृदय नहि रोष। अमिय सरिस शाकहिं परितोष
श्यामानन्द 'बालकवि' भान। तात हेमपति सेवि सुजान

वटगवनी

(४९)

[illegible] नहि भय सक सखि हे नवयुवती केर वास
[illegible] चितैअछि देखिय जाकय यमुना-पास
[illegible] कहर कर माधव वजितहुँ उपजय लाज
[illegible] परतीत करथि नहि निर्लज वसय समाज
[illegible] नहि कुपथ तेजथि हरि बलहुँ मचावथि रारि
[illegible] हृदय तेहने जनु निर्दय निठुर मुरारि
[illegible] हेमपति-चरण-सरोरुह-भगति-लोभ मन मांह
श्यामानन्द भान गोपीगन ! हरि थिक त्रिभुवन—नाह

मलार

(५०)

ऊधो ! हरिसं कहव बुझाय
गोकुल में पुनि भय उपजाओल राधा नोर वहाय
काजलमय लोचन-जल सं भेलि कत यमुना लहराय

वाट–निकट भय वास बनाओल ब्रज-वनिता अगुआय
युवती-दरश असम्भव भयगेल नयन मुनल नहि जाय
श्यामानन्द हेमपति—सेवक हरिकें देहु मनाय

समदाओन

(५१)

सखि ! हे विनती सुनथु जमाय
देल धिया अगियानि हिनक पद अनुचरि चरन लगाय
जे किछु अनट होइन्ह से सहिहथि डटथिन्ह जनु खिसिआय
कहव कतेक सुमति छथि अपनहि करथि न किछु अगुताय
श्यामानन्द दुखीमन गाओल हेमपति-भगति बढ़ाय

दोसर

(५२)

घर आङन सब अनचिन्ह होयतन्हि अनचिन्ह पुरनरनारि
जीवन-अवधि वितावय कोनविह जयती आन दुआरि
उदर हुँ राखि यतनदय पोसल करम क हम अति छोट
प्रान-पियारि कोना से होयती जिवतहिं आँखि क ओट
मुख लखि ककर धीर भय रहती के बुझतैन्हि अनुरोध

[illegible]—आन कोना सहिसकती अमरुख परम अबोध
[illegible] [illegible] बढ़ाओल ककरो फुलय फलय नव—वाटी
श्यामानन्द हेमपति—सेवक जगत क यैह परिपाटी

चिनी परसैक

(५३)

[illegible] नवनागरि रति-छवि पहिरि पीत-पट-वासे
[illegible] सुचिर सकुचि कय परसल पुरल सकल मन-आशे
[illegible] भोजन कयल वियनि लय करथि पवन-परचारे
[illegible] ढारि रुख खरिका पुनि कर देथि कुल क अनुसारे
[illegible] पानि आनि कय देलैन्हि पाओल धनि बड़भागे
श्यामानन्द हेमपति–सेवक धन धन धनिक सोहागे

नगनीपी

(५४)

[illegible] सुमुख-वर हिय अनुरागे । दीप मिझाय हटाओल नागे
[illegible] उपगत बड़ भागे । सकुचि नाग-घर नीपय लागे
[illegible] निपब देव उपरागे । ननदो कहथि सराहि सोहागे
श्यामानन्द हृदय रहु रागे । हेमपति क पद-कमल-परागे

ओरझोर

(५५)

कुल-कामिनि कमलायतलोचनि पहिरि ललित-पट—वासे
कर परनित कय सकुचलि चलली परिजनि पुर मन—आशे
भाय ससुर भैंसुर गुरुजन कर सङ भय भोजन—पाने
हरषि ननदि कर—पल्लव गहिलेल रचि रचि बिलमि पयाने
ओर झोर परसल शशधरमुखि अधर—लसित—मृदुहासे
श्यामानन्द भान कवि—शेखर हेमपति क पद—दासे

भंरफोरी

(५६)

नवयुवती बिच राजित रे, दुलहिनि नव-नेहे
कनकलता-वन-परिनत रे, जनु बिजुली-रेहे
गुरुजनि मंगल गाओल रे, उपगत भँरफोरी
दिअर छड़ी एक टोनल रे, रुसि रहली गोरी
बहुविध भेल सम्बोधन रे, हिय प्रेम प्रगाढ़े
पावि कनक-आभूषन रे, भेलि प्रनयिनि ठाढ़े
हेमपति-भगति-सरोवर रे, कय सुचिर सलाने
श्यामानन्द कवीश्वर रे, प्रमुदित-मन भाने

मसनहो

(५७)

[illegible] भरि चलली नहाय, पिअरमुख महुअरि हे
[illegible]—व्यथा अकुलाय, भेलिछलि दूवरि हे
[illegible] असलान भेली शुचि, हरष मनाओल हे
[illegible] परसल अभिरुचि, अइहव पाओल हे
[illegible] गोसाउनि पद-नति, पुनि पुनि हुलसित हे
श्यामानन्द हेमपति,-भगति—बिभूषित हे

चुमाओन

(५८)

मङ्गलमय शुभ—काल, कय फल धान रङल नव-डाल
अइहव हरष क भेरि, अरिपन दय देखथि फेरि फेरि
[illegible] मनोहर वारि, मुरति चुमाओन कर पुर-नारि
मुदित नगर भरि भेल, दूबि अछत लय आशिष देल
श्यामानन्द सुजान, तात-हेमपति-पद—नतिमान

महेशबानी

(५९)

[illegible]भुवर हमर दयानिधि, छथि त्रिभुवन केर नाह
सुनि आशा बड़गोट भेल, दुखिया क होयत निवाह
नेह—वश भय अवश भोलानाथ लेता कोर या

हाथ धय धैरज धरौता परिछि लोचन—नोर यो
माय, वाप, परिजन केर, की रहिकरव परोस
धय अयलहुँ गिरिजा-पति ! अपनेटा क भरोस
जगतभरि हम देखि हारल शरन योग न आन यो
द्रवहुँ आवहुँ हो दिगम्बर ! समय भेल अवसान यो
सहि न सकव हम आओर, दुख जर्ज्जर भेल देह
चाकर हमरहु राखव, करव मसानि क नेह
हेमपति-पद-भगत गाओल सुकवि श्यामानन्द यो
वचन आरत सुनि उमापति देथि अति आनन्द यो

गंगा

(६०)

जयदेवसरी ! जयदेवसरी !! अमिय सलिल कलि कलुषहरी !!!
मन कय राखल करव निमज्जन गतिविधि देखव नैनभरी
दुख संकट अपनहि हटिजायत जखनहिं जायव तीरधरी
गरव उमत भय ताहि भरोसहिं वलसं कुकरम कैलकरी
धरम क पथ पहिनहि सं छारल भय नहि उपजल एकघरी
बहुत दिवस पर अयलहुँ लगधरि परिछव भगवति ! नोनभरी
पतित उधारिनि ! कोर कय राखव जहिविधि भव-निधि पारतरी
श्यामानन्द हेमपति-सेवक पुनि पुनि सुरसरि पैरपरी

इति

दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा लहरी प्रेस, काशी में मुद्रित ।